

# शिक्षण हेतु आवश्यक है बहुआयामी मॉडल

प्रो. आलोक कुमार राय  
(लेखक लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति हैं)

किसी भी उच्च शिक्षण संस्थान की आधारभूत प्राथमिक इकाई होने के साथ ही साथ विद्यार्थी इसकी अमूल्य निधि होते हैं और विद्यार्थियों के साथ सतत एवं सिद्धिप्रद संबंधों का निर्माण ही संस्थानों की वास्तविक सफलता व सार्थकता का द्योतक होता है। इस दिशा में सकारात्मक दृष्टि और छात्रकल्याण के नए आयाम विकसित करने के साथ ही साथ छात्रों के बहुमुखी विकास के लिए मानकों एवं सतत धारणीय कार्यक्रमों का निर्माण एवं क्रियान्वयन किसी भी उच्च शिक्षण संस्थान का महनीय गुरुतरदायित्व है। अतएव इस परिप्रेक्ष्य में एक व्यापक परिकल्पना विकसित करना अत्यंत समीचीन व अवश्यमेव करणीय उद्यम है- एक ऐसी परिकल्पना, जो मात्र अकादमिक एवं व्यावसायिक गतिविधियों तक ही सीमित न रहे अपितु सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिकपक्षों को भी अंगीकृत कर व्यापक सरोकार रख सके।

प्रभावी शिक्षण एवं अधिगम के लिए

उपयुक्त पाठ्यक्रम, सरस व रुचिकर शिक्षा प्रणाली, सतत मूल्यांकन, छात्र सहायता एवं समुचित परामर्श हेतु सम्यक नीतियों की आवश्यकता होती है। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शैक्षिक प्रणाली की पुनर्रचना की एक समग्र योजना है, एक ऐसा प्रयास जहां विद्यार्थियों की प्रतिभा के समग्र विकास की अभिव्यंजना की संभावना हो, एक ऐसा विकास जो बौद्धिक, भावनात्मक, संवेगात्मकलब्धियों का तो विकास करे ही करे, साथ ही आध्यात्मिक लब्धियों की भी अभिवृद्धि करे। उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षार्थियों में आत्मविश्वास, क्षमताओं, समझ, श्रम, राष्ट्रचेतना, सार्थकता के गुणों के विकास के साथ ही साथ उनके समुचित सशक्तीकरण भी आवश्यक है। अंग्रेजी 'स्टूडेंट' को हम उसके प्रत्येक वर्ण से निःसृत शब्द विशेष के साथ यँ व्यक्त कर सकते हैं: सेल्फ काम्फिडेंस (आत्मविश्वास), टेलेंटेड (प्रतिभाशाली), अंडरस्टैंडिंग (समझदार), डिलिजेंट (परिश्रमी), एम्पावरड (सशक्त), नेशनलिस्ट (राष्ट्रभक्त), -टेनासियस (दृढ़निश्चयी)।

उच्च शिक्षण संस्थानों की साम्प्रतिक संरचना तथा कार्य संस्कृति में इस मॉडल को आत्मसात करने की अपार सम्भावनाएँ हैं और ऐसा किये जाने की महती आवश्यकता भी है। उच्च शिक्षण संस्थानों में आने वाले छात्र विभिन्न आर्थिक, सामाजिक और भू दृष्टान्तिस्थक

पृष्ठभूमियों से होते हैं। उनकी विषम-विसंगत पृष्ठभूमि, उनके ज्ञानार्जन एवं विकास पर कहीं से भी प्रतिकूल प्रभाव न डाल सके, यह जिम्मेदारी उच्च शिक्षण संस्थानों की होनी चाहिए। उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी की प्राथमिकता अकादमिक ज्ञानार्जन की होती है। इसका विस्तार यदि कक्षा से आगे तक हो तभी वह समग्र शिक्षा का स्रोत बनता है। विद्यार्थियों के ज्ञान का पोषण दो तरह से हो सकता है य सम्वन्धित विभाग के प्राध्यापकों द्वारा और विभाग के वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा। शिक्षक-छात्र मेंटरशिप कार्यक्रमों द्वारा, शिक्षक जहाँ विद्यार्थियों के लिये उनके घर के बाहर एक अभिभावक की भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं, वहीं सीनियर छात्र जूनियर छात्रों के लिए शिक्षण संस्थाओं की दैनंदिन गतिविधियों सम्बन्धी विभिन्न मुद्दों पर आवश्यक परामर्श एवं मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

उच्चशिक्षा में प्रविष्ट सभी छात्र मजबूत आर्थिक पृष्ठभूमि से ही नहीं होते हैं। भारतवर्ष में जहाँ जनसामान्य के लिए साधन सीमित हैं, उच्च शिक्षण संस्थाओं का यह दायित्व बन जाता है कि वे ऐसी प्रणाली विकसित करें जहाँ छात्रों की शिक्षा व अन्य शैक्षिक खर्चों, सामान्य खर्चों तथा निवास सम्बन्धी खर्चों को पूरा करने में आवश्यक आर्थिक मदद की जा सके। संस्थानों के ऐसे प्रयास मानव संसाधनों के सम्यक विकास में वृहद बदलाव ला सकते हैं। अर्न-

वाईल-लर्न प्रोग्राम शैक्षिक परिसरों में ही विद्यार्थियों के लिए पार्टटाइम सेवायोजन की व्यवस्था कर सकते हैं। विद्यार्थियों का ऐसा कार्यानुभव उन्हें भविष्य के सेवायोजन हेतु तैयार करता है, कार्य की महत्ता सिखाता है, उनमें आत्मविश्वास भरता है और सकारात्मक सोच विकसित करता है। हाँ यहाँ पर यह इंगित करना आवश्यक है कि पढ़ाई के साथ कितना काम करना है, इसकी एक सीमा का निर्धारण होना आवश्यक है जिससे शिक्षण-अधिगम में कोई व्यवधान उत्पन्न न हो।

विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता देने की दिशा में अगला कदम 'ओन अ स्टूडेंट' हो सकता है। शिक्षक, पूर्व छात्र और संस्थान के अन्यकर्मियों, एक पारदर्शी एवं सरल प्रक्रिया के तहत एक या अधिक छात्रों के पूर्ण या आंशिक खर्च के वहन की जिम्मेदारी ले सकते हैं। इससे विद्यार्थी में आभार का भाव एवं आलोच्य परिप्रेक्ष्य के अभिभावक में संतुष्टि का भाव जागृत होगा।

राष्ट्रीय उच्च शिक्षा नीति 2020 ने विद्यार्थियों के भावनात्मक स्वास्थ्य संवर्धन एवं तनावमुक्ति हेतु पूर्ववर्ती नीतियों एवं ढांचे में व्यापक बदलाव किये हैं। शैक्षणिक संस्थानों का यह कर्तव्य बनता है कि वे छात्रों में विद्यमान निहित क्षमताओं को पहचानें और उन्हें निखारें, उनकी मानसिक क्षमताओं को विकसित करें और उनके स्वास्थ्य एवं कौशल सम्बन्धी विविध

आयामों में निरन्तर परिमार्जन एवं अभिवृद्धि करते रहें।

साइकोथेरेपी और काउंसलिंग के केंद्रों की स्थापना कर के, चिंता, अवसाद, क्रोध, अनिद्रा, और अन्य व्याधियों का क्षरण कर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि की जा सकती है। विभिन्न थेरेपिस्ट और मनोवैज्ञानिक छात्रों के साथ स्वस्थ एवं प्रेरक संवाद स्थापित करके उनके असामान्य व्यवहारों पर नजर रख सकते हैं और समयानुसार निदानपूर्वक निवारण के समुचितकदम भी उठा सकते हैं। संस्थानों में हैप्पी थिंकिंग लैब की स्थापना इस दिशा में एक प्रभावी कदम सिद्ध हो सकता है।

सही करियर का चुनाव व्यक्ति के जीवन में अत्यंत आवश्यक होता है। शैक्षिक संस्थाएं विद्यार्थियों की प्रतिभा पहचानते हुए समुचित करियर के चुनाव, लक्ष्य निर्धारण एवं तत्सम्बन्धी अन्य सहायता कार्यक्रमों का सञ्चालन करते हुए उनकी संवाद शैली व क्षमता, अन्य सॉफ्टस्किल, प्रभावी जीवन वृत्त का निर्माण इत्यादि में सहायता कर सकते हैं।

इसके साथ-साथ संस्थान का दायित्व बनता है कि वे परिसर में ही स्वास्थ्य परामर्श सेवाओं का सञ्चालन करें। इसके अंतर्गत वे नियमित स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था, संचारी रोगों के निदान, रोकथाम एवं जागरूकता की व्यवस्था, जिम्नेजियम आदि का सञ्चालन एवं छात्राओं में नियमित रूप से होमोग्लोबिन टेस्ट इत्यादि की

व्यवस्था भी संचालित कर सकते हैं।

अकादमिक विकास एवं सर्जनात्मक सोच में पारस्परिक सामंजस्य ही व्यक्तित्व विकास का मूल है। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों के समग्र विकास की परिकल्पना एवं प्रयास का दस्तावेज है। संस्थानों का दायित्व है की वे ऐसे मंचों का निर्माण करें जहाँ विद्यार्थी अपनी ऊर्जा एवं क्षमताओं का प्रदर्शन कर सकें। इससे छात्रों में नेतृत्व, आत्मविश्वास एवं पारस्परिक संवाद जैसी क्षमताएं समग्र रूप से विकसित होंगी।

क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा युवा शक्ति का सर्जनात्मक योजन किया जा सकता है। विद्यार्थियों की क्षमताओं के दृष्टिगत विभिन्न क्लबों की स्थापना किया जाना भी सकारात्मक सिद्ध हो सकता है।

अतः शैक्षिक संस्थाओं द्वारा सतत रूप से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के विकास हेतु प्रेरित होकर नीति निर्माण एवं इन नीतियों पर यथाशीघ्र प्रभावी क्रियान्वयन समय की मांग है। छात्रकल्याण कार्यक्रमों पर उचित दिशानिर्धारण, सोच, प्रेरित एवं प्रभावी कार्यशैली राष्ट्रनिर्माण की दिशा में प्रभावी कदम होंगे। ऐसे सोपान भारतीय शिक्षा प्रणाली और राष्ट्र के सशक्तीकरण की दिशा में सकारात्मक योगदान के कारक सिद्ध होंगे और हमारी युवाशक्ति विश्वपटल पर असंख्य कीर्ति रश्मियां लेकर चमकेगी।

THE PIONEER PAGE 12

RASHTRIYA SAHARA PAGE 5

## Re-engineering holistic student support model beyond conventions

Students coming to a higher educational institution belong to different economic, social, educational, personal and geographical background. This difference in the background should not create differences in their learning. Hence, special care is required by HEIs. The most important aspect of a student's life in the institution is the academic learning which if goes beyond class, leads creates holistic learning. Students can be mentored in two ways, one, by their subject teachers, other by their departmental seniors. Teacher student mentor-mentee relationship helps the student find a guardian away from home who he/she can discuss personal and professional issues with. Student guardian can certainly provide advises on several practical issues confronting the institutional life of the student. Not all students who join a higher educational institution come with resources adequate enough for institutional living. In a country like India where resources are limited, it is the institutional responsibility to provide financial support to those in need. A robust mechanism is needed to help deprived students to meet expenses towards fees, education, living and lodging.

Effective learning requires comprehensive approach for appropriate curriculum, engaging pedagogy, continuous formative assessment, and adequate student support. The vision of the New National Education Policy (NEP-2020) includes revamping of student support for enhanced student experiences. Initiatives are required to ensure that learning environments are engaging and supporting.

NEP-2020 envisions complete engineering of the educational system is aimed at developing the students holistically i.e. by nurturing their intellectual, emotional and spiritual quotients. Students in a Higher Educational Institution must inculcate following attributes: S- Self-confident, T- Talented, U- Understanding, D- Diligent, E- Empowered, N- Nationalist, - Tenacious.

To infuse the STUDENT attributes among students, a comprehensive student support model can be contemplated and culminated in the culture of higher education institution.

Students coming to a higher educational institution belong to different economic, social, educational, personal and geographical background. This difference in the background should not create differences in their learning. Hence, special care is required by HEIs. The most important aspect of a student's life in the institution is the academic learning which if goes beyond class, leads creates holistic learning. Students can be mentored in two ways, one, by their subject teachers, other by their departmental seniors. Teacher student mentor-mentee relationship helps the student find a guardian away from home who he/she can discuss personal and professional issues with. Student guardian can certainly provide advises on several practical issues confronting the institutional life of the student. Not all students who join a higher educational institution come with resources adequate enough for institutional living. In a country like India where resources are limited, it is the institutional responsibility to provide financial support to those in need. A robust mechanism is needed to help deprived students to meet expenses towards fees, education, living and lodging.

Symbiotic initiatives to develop students as valuable human resource to augment the Institutional framework can be a game changer. "Earn while Learn" programmes encourage students to take up part-time jobs at the institution itself. Students involvement in HEIs functioning learn hands-on experience, prepare them for future jobs, adds value to their skill set, perpetuates dignity of labour and channelises energy positively along with providing

them an opportunity to meet their expenses. A ceiling should be stipulated so that jobs do not hinder studies. Another initiative to provide financial support to students could be schemes like "Own a student" by teachers, non-teaching staff, alumni and society. Under this scheme, different stakeholders of the institution may take responsibility of a student by bearing partial or complete financial expenditure through an open and transparent process. It can bestow a sense of satisfaction to the adopter and a sense of gratitude in the adoptee. Such schemes may play a catalytic role in the education of bright needy students.

NEP-2020 has also proposed a monumental change in our education system by cultivating the student's mental health, stress and emotional adjustments. HIEs should support students to maximise and realise their potential, boost psychological immunity, health and skills to thrive in life challenges. Psychotherapy and counselling services may help address the issues of anxiety, anger, improper sleep, relationships, fear, depression and neurosis management. Through this, students can manage their emotions. Therapists and psychologists can identify unusual behavior and help students express their emotions effectively. A Happy Thinking Lab with the intent of assessing the psychological status of the student and suggest corrective course of action could be created.

Choosing a suitable career is very important. HEIs should help the students in scientific exploration of self-interest, strengths, goal setting, and options available may facilitate students

towards a conscious career decision. Counsellors can assist in developing impressive CVs, communication and soft skills, exploring career opportunities, and guide in facing competitions. HEIs should also introduce student healthcare support on the premises. Activities can include regular health check-up to diagnose any infectious disease, a gymnasium to help maintain body-mass index and regularly test haemoglobin levels, especially of female students.

Personality development requires balance between academic growth and creative acumen. NEP 2020 stresses upon overall grooming of the students. Institutions, therefore, are supposed to create student platforms to showcase talents. The student evolves while participating in groups and identifying their innate strengths. This improves their leadership, interpersonal skills and self-confidence. The youthful energy can be harnessed through cultural and sports opportunities. Creating clubs where students enroll according to their interests and talents are invaluable in inculcating team feeling.

HEIs should hence essentially strive to develop a structured and sustainable framework to build synergistic relationship with students. A proactive student friendly approach is the need of the hour and sooner HIEs understand their responsibility in building a resilient new generation. To contribute in the drive of strengthening Indian higher education, such initiatives may prove to be meaningful. After all our nation is envied worldwide for its youth power.

(The writer is Vice-Chancellor, Lucknow University)

## लविवि में 20 से शुरू होगी ऑनलाइन कक्षाएं

लखनऊ (एसएनबी)। लखनऊ विश्वविद्यालय में ऑनलाइन कक्षाएं 20 मई 2021 से शुरू होंगी। विश्वविद्यालय के कुलपति का कहना है कि विभागाध्यक्षों द्वारा ऑनलाइन कक्षाओं की साप्ताहिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी। सभी पाठ्यक्रमों की ऑनलाइन कक्षाओं के लिए स्लेट का एकीकरण किया जाएगा। लैबोरेटरी क्लास के लिए नए वर्चुअल प्लेटफॉर्म तलाशे जाएंगे। उन्होंने बताया कि ई-सामग्री को समृद्ध करने के लिए टैगोर पुस्तकालय में नए ई-संसाधन जोड़े जाएंगे।

वही दूसरी तरफ लविवि के प्रवक्ता का कहना है कि उच्च शिक्षा विभाग, उप्र द्वारा अनुशंसित विभिन्न पाठ्यक्रमों के सामान्य न्यूनतम पाठ्यक्रम पर आज व्यापक चर्चा हुई। शिक्षा शास्त्र, वाणिज्य और कृषि विभागों ने कुछ सुधार के बाद अध्ययन मंडल द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम को मंजूरी दे दी है। अन्य विभाग भी आवश्यक संशोधन, जो अधिकतम 30 फीसदी तक हो सकता है, के बाद अपने- अपने पाठ्यक्रम को मंजूरी देंगे।